स्वपोषित सनातनीय संस्कृति और आदिगुरु शंकराचार्य

डॉ० ज्योति सिंह
सहायक आचार्या
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय सूरत
सं० सूत्र – 7206536258
jyotisinghnik195@gmail.com

कलियुग में वैदिक संस्कृत भाषा राज-काज तक सिमित हो गई थी या कहें कि शिष्ट समाज की भावनाओं को अभिव्यक्त करने तक ही उसकी भूमिका रह गई और जनता की भावनाओं को समझने के लिए जो पहले लौकिक संस्कृत भाषा प्रचलन में थी उसमें अनगिनत विकार आ गए ;परिणामस्वरूप समाज में अपभ्रंश, प्राकृत, पालि इत्यादि भाषाएँ व बोलियाँ प्रचलित हो गई। संस्कृत भाषा से दूर होने के कारण वैदिक वाङ्गमय तथा उसके मर्म से जनता की अनभिज्ञता बढ़ने लगी; परिणाम स्वरूप उनमें अंध विश्वास और अंध-भक्ति बढ़ने से समाज में
कई प्रकार की भ्रांतियाँ व्याप्त हो गई ।

इस समस्या के निवारण हेतु ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था, जो सनातनी हिन्दू समाज के वास्तविक स्वरूप को उद्घाटित करता। महर्षि पतंजलि के योगसूत्र पर महर्षि वेद व्यास बदरायण के द्वारा लिखे भास्य को जन- जन तक पहुंचाने के लिए सरल और सटीक शब्दों में व्याख्या करने वाले विद्वान सार्वजनिक सुलभ नहीं थे ;प्रकृति की उपासना करने वाले निर्गुण व सगुण ब्रह्म के अवतारों की पूजा करने वाले गृहस्थ सनातनीय - समाज को कई सम्प्रदाय के जंजाल में फँसाने का कार्य किया जाने लगा। बौद्ध दर्शन राहु- केतु की तरह हमारे वैदिक वाङ्गमय को ग्रसित कर लिया । यद्यपि गौतम बुद्ध जन्म मृत्यु जरा व्याधि से जीव को मुक्त करने के लिए ही 'बुद्धमं शरणं गच्छामि ' का मंत्र दिए थे ,लेकिन भविष्य में इसमें अनेकों विकृतियाँ आ गई। इसके बावजूद बौद्ध दर्शन का विश्व पटल पर खूब प्रचार-प्रसार हुआ, लेकिन सनातनी संस्कृति से इसकी जड़ों को स्वतंत्र रखने के कारण हिन्दू सनातनी समाज दुर्बल हो गया।

ऐसी विपरीत परिस्थिति में सातवीं व आठवीं शताब्दी की क्षेत्रीय भाषाओं की जलधारा प्रवाह क्षेत्र के विपरीत दिशा में आदिगुरु शंकराचार्य वैदिक संस्कृत वाङ्गमय को पुनः प्रतिष्ठापित करने का बेड़ा उठाया और उन्होंने वेद व्यास बदरायण के भाष्य पर प्रकरण लिखा। इसीलिए वैदिक कालीन संस्कृति के पोषक के रूप में आदिगुरु शंकराचार्य को जाना जाता है । इनको भगवान शिव का अवतार भी माना जाता है। इनका प्रादुर्भाव भारतवर्ष के दक्षिण भू-भाग के केरल क्षेत्र में होता है , जहाँ का तत्कालीन समाज आलवर भक्तों की भक्ति में गोते लगा रहा होता है और यदि इनके दादा - दादी व माता- पिता की बात की जाए तो वे भी आध्यात्मिक ज्ञान में निमग्न रहते थे और उसी कापरिणाम यह हुआ कि उन्हें भगवान शिव के तत्व से युक्त पुत्र की प्राप्ति होती है । घर परिवार समाज की स्थिति तो ऐसी थी ; लेकिन आर्यावर्त भारत खण्ड के अन्य क्षेत्रों में आक्रांताओं के कारण कई प्रकार की विकृतियाँ आ गई थी।

सनातनी संस्कृति व वैदिक परम्परा पर विश्वास की डोर दुर्बल हो जाने के कारण '[illegible]' भिन्नता की स्थिति आ गई ;इस कारण सनातनी संस्कृति के चिर पुरातन नित्य नूतन वाली प्रकृति की ओर से ध्यान हठने लगा। इसी कारण शुद्धोधन महाराज के पुत्र सिद्धार्थ भी सत्य की खोज में एक नए मार्ग का अनुशरण किए। वेदों के खण्डन- मण्डन से उन्होंने अपने मन को तो संतुष्ट कर लिया ; लेकिन अपनी धर्मपत्नी यशोधरा और अपने पुत्र राहुल के प्रति वे न्याय नहीं कर पाए । यही नहीं " ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योर्तिगमय ।मृत्योर्मा अमृतंगमय ।" जैसे जीवन के मर्म को समझाने वाले वेदों के मंत्रों की महत्ता को भी धूल धुसित कर दिए। सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध बने इन विभूति को यह भान नहीं था कि ऋग्वेद के इस सूत्र पर कई पाश्चात् विद्वान अपनी जीवन की सभी पूजा को उपक्रम के लिए तत्पर थे। गौतम बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध सम्प्रदाय में " ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः । महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह ॥ (मनुस्मृति ११।५४) जैसी

अनेकों विकृतियाँ आ गई थी। सहजयायन , ब्रजयायन व हीनायन से वैदिक संस्कृति व सनातनी हिन्दू समाज दुर्बल और निष्कृय हो गया , उधर दूसरी ओर यहाँ की प्राकृतिक सम्पदा और वैदिक कालीन साहित्यिक व सांस्कृतिक सम्पन्नता से विदेशी आक्रांताएँ बलात् ही आकर्षित हो रहे थे और वे न सिर्फ यहाँ के प्राकृतिक संसाधनों का शोषण किए, अपितु वेदों से ज्ञान– विज्ञान के मूल मंत्रों का शोधन किया और अपने नाम पर उन आविष्कारों को पेटेंट करवाकर मूलआविष्कारक बन गए। हमारे सुवर्ण विरासत से हमें अनभिज्ञ रखकर हमारे भीतर हीन भावना उत्पन्न करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। तत्कालीन स्थिति उस शेर के बच्चे की तरह हो गई थी जो भेड़ के झुन्ड़ में रहने से उन्हीं के जैसा आचरण करने लगा था; लेकिन जिस प्रकार शेर के द्वारा उसके भीतर के शेरत्व को जगाया गया ; ठीक उसी प्रकार की श्रेणी में आदि गुरु शंकराचार्य आते हैं और अद्वैतवाद व वेदांत का दर्शन देकर वेदों की महत्ता प्रतिपादित करते हैं ।

आठ वर्ष की उम्र तक सभी वेदों का अध्ययन कर संन्यास धर्म को स्वीकार करने वाले शंकर ने बारह वर्ष की अवस्था तक पूरे भारत वर्ष का भ्रमण चार बार करते हुए अपने समाज की समस्याओं को जड़ से निर्मूल करने के लिए वेदों पर भाष्य लिखा। सिर्फ भाष्य ही नहीं लिखा अपितु विद्वत समाज के साथ शास्त्रार्थ करके वैज्ञानिक कसौटी पर वेदों की प्रतिष्ठा समाज के अन्तिम छोर तक की और सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में आबद्ध किए।

सर्व विदित है कि आदिगुरु शंकराचार्य का अवतार कलियुगीन दुष्प्रभाव को रोकने के लिए ही हुआ था। अतः उन्होंने सांस्कृतिक , धार्मिक व राजनीतिक आक्रान्ताओं के प्रभाव को निष्कृय करने के लिए दसनामी संन्यासी सम्प्रदाय की स्थापना की ।

अल्पायु में सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन करके संन्यास ग्रहण करने वाले आदिगुरु शंकराचार्य गौड़ी सम्प्रदाय में दीक्षित गोविन्द भगवद्पाद का गुरुत्व स्वीकार किए और उनके आज्ञानुसार वैदिक धर्म के प्रति आबद्ध कुमारिल भट्ट के संरक्षण में आए। बारह वर्ष से सोलह वर्ष की आयु तक भाष्य , प्रकरण और स्रोत ग्रंथ लिपिबद्ध किए और समाज को अद्वैतवाद व [illegible]

शंकराचार्य ने निम्नलिखित ग्रंथों पर भाष्य लिखा है --- ब्रह्मसूत्र पर ब्रह्मसूत्रभाष्य ,ऐतरेय उपनिषद् ,
वृहदारण्यक उपनिषद् ,
ईश उपनिषद् (शुक्ल यजुर्वेद) ,
तैत्तरीय उपनिषद् (कृष्ण यजुर्वेद),
श्वेताश्वतर उपनिषद् (कृष्ण यजुर्वेद) ,
कठोपनिषद (कृष्ण यजुर्वेद) , केनोपनिषद (सामवेद) ,
छान्दोग्य उपनिषद् ((सामवेद) ,
माण्डूक्यउपनिषद ,गौड़पादकारिका ,
मुण्डक उपनिषद् (अथर्ववेद) ,
प्रश्नोपनिषद ((अथर्ववेद) ,
श्रीमद् भगवद्गीता (महाभारत),
विष्णु सहस्रनाम (महाभारत) ,
सानत्सुजातिय (महाभारत) ,गायत्री मंत्र इत्यादि भाष्य । इसके साथ निम्नलिखित प्रकरण ग्रन्थ भी लिखे ---
विवेक चूड़ामणि ,उपदेशसाहस्री ,

शतश्लोकी ,दशश्लोकी ,एकश्लोकी ,
पञ्चीकरण ,आत्मबोध,
अपरोक्षानुभूति ,साधनापञ्चकम् ,
निर्वाणशतकम् ,मनीषापञ्चकम् ,
यतिपञ्चकम् ,वाक्यशुद्धि,तत्त्वबोध ,
वाक्यवृत्ति ,सिद्धान्ततत्वबिन्दु,निर्गुणमानसपूजा ,प्रश्नोत्तररत्नमालिका इत्यादि । इसके अतिरिक्त उन्होंने षष्ट देवों की आराधना के लिए निम्न लिखित स्तोत्रम की रचना किया--
गणेश पंचरत्नम् ,गणेश भुजांगम् ,
शिवस्तुति कालभैरवाष्टक ,दशश्लोकी स्तुति ,दक्षिणमूर्ति अष्टकम् ,दक्षिणमूर्ति स्तोत्रम्
दक्षिणमूर्ति वर्णमाला स्तोत्रम् ,
मृत्युंजय मानसिक पूजा ,
वेदसार शिव स्तोत्रम् ,
शिव अपराधक्षमापन स्तोत्रम् ,
शिव आनंदलहरी ,
शिव केशादिपादान्तवर्णन स्तोत्रम् ,
शिव नामावलि अष्टकम् ,शिव पंचाक्षर स्तोत्रम् ,शिव पंचाक्षरा नक्षत्रमालास्तोत्रम् ,
शिव पादादिकेशान्तवर्णनस्तोत्रम् ,
शिव भुजांगम् ,शिव मानस पूजा ,
सुवर्णमालास्तुति ,शक्तिस्तुति ,अन्नपूर्णाअष्टकम् ,आनंदलहरी ,
कनकधारा स्तोत्रम् ,कल्याण वृष्टिस्तव ,गौरी दशकम् ,त्रिपुरसुंदरी अष्टकम् ,त्रिपुरसुंदरी मानस पूजा ,
त्रिपुरसुंदरी वेद पाद स्तोत्रम् ,
देवी चतु:षष्ठी उपचार पूजा स्तोत्रम् ,
देवी भुजांगम् ,नवरत्नमालिका ,
भवानी भुजांगम् ,भ्रमरांबा अष्टकम् ,
मंत्रमातृका पुष्पमालास्तव ,
महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम् ,
ललिता पंचरत्नम् ,
शारदा भुजंगप्रयात स्तोत्रम् ,
सौन्दर्यलहरी ,नर्मदाष्टक ,
भगवान विष्णु एवं उनके अवतारों की स्तुति-- अच्युताष्टकम् ,कृष्णाष्टकम् ,गोविंदाष्टकम् ,जगन्नाथाष्टकम् ,पांडुरंगाष्टकम् ,भगवन् मानसपूजा ,भजगोविंदम् ,
राम भुजंगप्रयात स्तोत्रम् ,
लक्ष्मीनृसिंह करावलंब (करुणरस) स्तोत्रम् ,लक्ष्मीनरसिंह पंचरत्नम् ,
विष्णुपादादिकेशान्त स्तोत्रम् ,
विष्णु भुजंगप्रयात स्तोत्रम् ,
षट्पदीस्तोत्रम् ।
अन्य देवताओं एवं तीर्थों की स्तुतियाँ
अर्धनारीश्वरस्तोत्रम् ,उमा महेश्वर स्तोत्रम् ,काशी पंचकम् ,गंगाष्टकम् ,
गुरु अष्टकम् ,नर्मदाष्टकम् ,निर्गुण मानस पूजा ,मनकर्णिका अष्टकम् ,
यमुनाष्टकम् -१ ,यमुनाष्टकम्-२ इत्यादि।
तत्पश्चात उन्होंने सोलह से बत्तीस वर्ष की आयु तक वेदों व उपनिषदों के तत्वों को समाज के अन्तिम पंक्तियों तक पहुँचाने का कार्य किया और यह सिद्ध कर दिया कि सिद्धियाँ तो

स्वान्तः सुखाय प्राप्त होती हैं, लेकिन उन सिद्धियों का शाश्वत होना भी उतना ही आवश्यक है।

शिव तत्व देने वाले शंकराचार्य को आदिगुरु के रुप में स्थान प्राप्त हुआ। सत्य युग , त्रेता युग, द्वापर युग में भगवान विष्णु युगानुरुप अवतार लिए और भगवान शंकर अपने आराध्य विष्णु की सेवा व उपासना के लिए सूक्ष्म रूप में उपस्थित रहते थे ; परन्तु कलयुग में वे आदिगुरु के रुप में प्रकट होकर कलयुगीन प्रभाव से उत्पन्न काले घनघोर बादल से आच्छादित वैदिक संस्कृति को निर्मल व स्वच्छ करने का कार्य किए। देवों की भूमि जम्बूद्वीपे आर्यावृते भरतखण्डे को अनादि काल तक एक सूत्र में बांधकर रखने के लिए ही उनका अवतार आदिगुरु के रुप में हुआ था ; तभी तो उन्होंने दशनामी संन्यास सम्प्रदाय स्थापित किए और यह सिद्ध कर दिए कि किसी भी समाज व राष्ट्र की संस्कृति को नष्ट– [illegible] आदिगुरु शंकराचार्य के महत्त्व [illegible] हैं।छेड़ छाड़ करके उनके समय को कम करके बताया और हिन्दू समाज में निर्गुण व सगुण के भेद को अपने जाल में फँसी मकड़ी की तरह बताकर अपने अल्हा और ईशू का महिमा मंडन किया और धर्म परिवर्तन के लिए उकसाया; यही नहीं अद्वैत वेदांत दर्शन को सामने रखकर उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय या आर्य–अनार्य की (फिलोसफी) दर्शन से सनातन हिन्दू समाज की कड़ी को दुर्बल करने का षड़यन्त्र किया। इसके साथ ही आदि गुरु शंकराचार्य के महत्त्व को कम आंकने के लिए कुछ बिके हुए इतिहासकारों के द्वारा इनको गौतम बुद्ध की अगली कड़ी भी बताया गया । परन्तु आदिगुरु शंकराचार्य के द्वारा लिखे भाष्य ,प्रकरण, स्रोत , मंत्र इत्यादि के नाम का उल्लेख करने के पीछे का एक मात्र कारण यह है कि जनता जनार्दन को यह पता चले कि जिस शंकराचार्य के ऊपर वेदान्त व अद्वैत दर्शन देने का अभियोग लगाया गया, उनको मूर्ति पूजा विरोधी बताया गया ; उस शंकराचार्य ने सभी षष्ठ देवी देवताओं की आराधना करने के लिए इतने सारे स्त्रोत लिपिबद्ध किए।

अन्तोगत्वा आदि गुरु शंकराचार्य के दूरदर्शिता को समझा जा सकता है कि प्रत्येक सनातनी हिन्दू समाज में चारों धाम की यात्रा करना, बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करके शक्ति प्राप्त करना, इक्यावन शक्तिपीठों में सिद्धि प्राप्त करना, कुम्भ मेला में चारों मठों की महत्ता अनिवार्य रुप से प्रतिपादित करते रहना सनातनी संस्कृति व समाज के लिए काम,धर्म अर्थ, मोक्ष की प्राप्ति हेतु अभिन्न अंग होता है ; लेकिन प्रत्यक्ष रुप से आदि गुरु शंकराचार्य के महत्त्व को साधारण समाज के लोग कभी जान नहीं पाए , लेकिन परम्परा व जीवन पद्धति के रुप में अपनाते हुए जनता को कभी भी इसके जड़ तक पहुँचने की आवश्यकता पड़ी ही नहीं । यही कारण है कि भक्ति काल को स्वर्ण युग के नाम से जाना तो जाता है ; लेकिन साहित्य समाज में भक्ति काल के वास्तविक स्वरुप की चर्चा नहीं की जाती। भक्ति काल को स्वर्णिम काल के रूप में हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों को पढ़ाया तो जाता है लेकिन संत व कवियों की वाणी में ही ईश्वर के सगुण व निर्गुण रुपों के पंचदेवों (गणेश, शिव, शक्ति, विष्णु, सूर्य) व षष्ठ देवों (गणेश, शिव, शक्ति, विष्णु, सूर्य , अग्नि) में समन्वय स्थापित करने की बातें बताई जाती है लेकिन आदिगुरु शंकराचार्य के द्वारा स्थापित भौगोलिक एक सूत्रता की बातें नहीं बताई जाती कि कैसे उन्होंने चारों दिशाओं में अखण्ड भारत के स्वरूप को नियंत्रित व संचालित करने के लिए पीठों की स्थापना किया। वर्तमान समय के भारतवर्ष के क्षेत्रफल के भीतर चारों पीठ आते हैं। अब इन पीठों के कार्य क्षेत्र पर एक दृष्टि डाल लेते हैं ---

१. भारतवर्ष के उत्तर दिशा में आचार्य त्रोटकाचार्य के नेतृत्व में ज्योर्तिपीठ की स्थापना की जाती है , जिसको अथर्ववेद का संरक्षण करना था और इस पीठ का मूल मंत्र 'अयमात्मा ब्रह्मा 'है । यहाँ का धाम उत्तराखण्ड में स्थित बदरिकाश्रम (बदरीनाथ धाम) है। इस पीठ में दीक्षित संन्यासियों के नाम के साथ गिरि, पर्वत, सागर सम्प्रदाय नाम का विशेषण जुड़ा हुआ होता है , जिनके पास अथर्ववेद के संरक्षण और संवर्धन करने के साथ गिरि, पर्वत, सागर के क्षेत्रों में रह रहे प्राणियों की रक्षा करने का दायित्व था तथा इसके साथ ही यहाँ रह रहे मनुष्यों में वैदिक संस्कृति का संस्कार भी करने का महत्त्वपूर्ण दायित्व था । यही कारण है कि जब जब बाहरी आक्रांताएँ भारत माँ के कलेजे को छलनी करते थे तो यहाँ के प्रकृति उपासक हुल (क्रान्ति) करने के लिए तत्पर थे। यही कारण है कि आदिवासियों द्वारा समय समय पर आन्दोलन (मुंडा–आन्दोलन,संथाल–आन्दोलन,इत्यादि) किए गए ;जिसको गोरे और काले अंग्रेजों ने विद्रोह की श्रेणी में रखा ।

२ भारत वर्ष के पश्चिम में स्थित है द्वारिका शारदापीठ कालिका मठ । आचार्य हस्तामलक (मूल नाम पृथ्वीधर) के संरक्षण में तत्व मसि के मूल मंत्र को लेकर सामवेद पर अध्ययन किया जा रहा था । यहाँ स्थित धाम द्वारिका पुरी है । इसमें दीक्षित संन्यासियों के नाम के साथ तीर्थ और आश्रम जुड़ा रहता है , जिनका कार्य क्षेत्र पूरे भारत वर्ष में स्थित तीर्थ और आश्रम का संरक्षण, संवर्धन करने के साथ वैदिक संस्कृति के मूल तत्व को प्रत्यारोपित करना है । इसके माध्यम से चारों धाम ,बारहों ज्योर्तिलिंगों तथा इक्यावन शक्तिपीठों की यात्रा कुम्भ मेला, माघ मेला, गंगा दशहरा, देव दीपावली इत्यादि अनेकों परम्पराओं को सुचारु रुप से संचालित किया जाता है ।

३ भारतवर्ष के पूर्व में आदिगुरु शंकराचार्य के प्रथम शिष्य पद्मपादाचार्य के नेतृत्व में ' प्रज्ञान ब्रह्मा 'के मूल मंत्र को प्रतिपादित करने के लिए गोवर्धनपीठ की स्थापना की गई ; जिसमें ऋग्वेद का संरक्षण और संवर्धन किया जाता है। जगन्नाथपुरी धाम इस पीठ के अन्तर्गत आता है । इस सम्प्रदाय में दीक्षित संन्यासियों के नाम के साथ वन और अरण्य जुड़ा होता है। वन और अरण्य में रह रहे जन जीवन अर्थात् आदिवासी समाज के मूल तत्व का संवर्धित करते हुए उनके वैदिक स्वरुप से उनके वर्तमान को जोड़ा जाता है। हेतु आचार्य सुरेश्वर जी (मूल नाम मण्डन मिश्र) के सानिध्य में हुआ था। इस पीठ का मूल मंत्र 'अहं ब्रह्मास्मि 'है। रामेश्वरम् धाम इस पीठ के अन्तर्गत आता है और इसमें दीक्षित संन्यासियों के नाम के साथ सरस्वती ,भारती ,पुरी सम्प्रदाय नाम विशेषण लगाया जाता है। दण्डीनामी संन्यासी वेदों की दार्शनिक, वैज्ञानिक, सैद्धांतिक, आध्यात्मिक स्तर पर शास्त्रार्थ करके समाज में सनातन धर्म की पुनः स्थापना करते थे ।

४ भारतवर्ष के दक्षिण में श्रृंगेरी पीठ (मठ) की स्थापना यजुर्वेद के अध्ययन हेतु आचार्य सुरेश्वर जी (मूल नाम मण्डन मिश्र) के सानिध्य में हुआ था। इस पीठ का मूल मंत्र 'अहं ब्रह्मास्मि 'है। रामेश्वरम् धाम इस पीठ के अन्तर्गत आता है और इसमें दीक्षित संन्यासियों के नाम के साथ सरस्वती ,भारती ,पुरी सम्प्रदाय नाम विशेषण लगाया जाता है। दण्डीनामी संन्यासी वेदों की दार्शनिक, वैज्ञानिक, सैद्धांतिक, आध्यात्मिक स्तर पर शास्त्रार्थ करके समाज में सनातन धर्म की पुनः स्थापना करते थे । इसके अतिरिक्त नागानागी संन्यासी भी होते थे जो अस्त्र- शस्त्र से सुसज्जित होते थे। सशस्त्रों से समाज के विकारों का शोधन करते थे;इसी का साक्षात् दर्शन संन्यासी आन्दोलन में स्पष्ट होता है , जिसने मुगलों और अंग्रेजों की नींव हिला दी थी। इसके साथ ही गृहस्थनामी संन्यासी भी होते थे ,जो जनक राज की तरह गृहस्थ जीवन में रहते हुए विदेह की तरह रहते थे;ये लोग तन मन धन से अन्य सम्प्रदाय के संन्यासियों का रक्षण- पोषण करते थे । इसी प्रकार अन्य प्रकार के कई और संन्यासी होते थे जो समाज व राष्ट्र हित में कार्यरत थे ।

सुखसागर, शिव पुराण, विष्णु पुराण, रामायण , श्रीमद्भागवत पुराण, , महाभारत इत्यादि समेत सभी अट्ठारह पुराणों में चित्रित भगवान विष्णुदेव ,भगवान शंकर,भगवान ब्रह्मा के चरित्र का वर्णन सिर्फ व्यवहारिक पक्ष है उन सिद्धांतों का जो वेदों और उपनिष्दों में लिपिबद्ध है ;

इसीलिए आदि गुरु शंकराचार्य को ज्ञान था कि आने वाले समय में सरल और सहज मार्ग पर चलते रहने से प्रमुख वेद उपनिषद् इत्यादि से अपना सनातनी समाज दूर होता जाएगा । अतः उन्होने भारतवर्ष के चार कोने में चारों वेदों के ज्ञान के लिए केन्द्र बनाया । यह केन्द्र ऐसे बनाए गए कि सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को भौगोलिक व सांस्कृतिक विरासत से उनको जोड़ा रखा जाए। यही कारण है कि कम्बोडिया जैसे मुस्लिम बहुल राष्ट्र में उनके अपने वायुयान का नामकरण विष्णु जी के वाहन,'गरुड़ 'पर किया गया और वहाँ के नोटों पर श्री गणेश जी का चित्र अंकित है,विद्या की देवी सरस्वती की मूर्ति संसद भवन के परिसर में स्थापित की गई है इत्यादि। ऐसे ही अनेकों ऐसे राष्ट्र हैं जिनकी वर्तमान पूजा पद्धति बदल गई है लेकिन उनकी संस्कृति- परम्परा वैसी की वैसी है। यही कारण है कि दो सौ राष्ट्र में रामायण का मंचन किया जाता है,अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में भगवान सूर्य से ऊर्जा प्राप्त की जाती है । ऐसे अनेकों प्रकरण है जिनका बीजारोपण आदिगुरु शंकराचार्य के द्वारा किया गया था और रक्षण - पोषण वेदों के संरक्षण और संवर्धन ठीक [illegible] [illegible] [illegible] में समाज को अग्रसित करता रहेगा । वर्तमान समय में यह सभी विद्यापीठ,गुरु कुल ,दस [illegible] शंकराचार्य के इसी प्रयास का परिणाम होगा कि किसी न किसी दिन भारत माता के न सिर्फ मुकुट जम्मू कश्मीर के सम्पूर्ण क्षेत्र को , उनकी कटी हुई सुदृढ़ भुजाएँ सम्पूर्ण हिमालय का क्षेत्र को तथा चरण पखारते सागर में स्थित श्रीलंका इत्यादि क्षेत्र को एक सांस्कृतिक सूत्र में जोड़कर प्रस्तुत तो करेंगे ही साथ में भौगोलिक क्षेत्र का भी विस्तार होगा। इसी कारण आदिगुरु शंकराचार्य को दिग्विजयी कहा जाता है । केरल में जन्में आचार्य जी की सबसे ऊंची प्रतिमा उत्तराखण्ड में स्थापित करके मोदी सरकार उस दिग्विजेता का सम्मान करते हैं और अखण्ड भारत के अखण्ड व सुदृढ़ स्वरुप को गढ़ने की ओर एक कदम आगे बढ़ा दिए हैं ।

अस्तु ।